Serving Education for Last 40 Years

NEERAJ®

विकास : पुनर्चिंतन

(Rethinking Development)

B.S.O.G.-173

Chapter Wise Reference Book
Including Many Solved Sample Papers

Based on

C.B.C.S. (Choice Based Credit System) Syllabus of

I.G.N.O.U.

& Various Central, State & Other Open Universities

By: *Vaishali Gupta*

NEERAJ PUBLICATIONS
(Publishers of Educational Books)

Mob.: 8510009872, 8510009878 E-mail: info@neerajbooks.com
Website: www.neerajbooks.com

MRP ₹ 280/-

Content

विकास : पुनर्चिंतन

(Rethinking Development)

Question Paper—June-2023 (Solved) 1
Question Paper—December-2022 (Solved) 1
Question Paper–Exam Held in March-2022 (Solved) 1
Sample Question Paper–1 (Solved) 1
Sample Question Paper–2 (Solved) 1

S.No.	Chapterwise Reference Book	Page

विकास पुनरावलोकन (Unpacking Development)

1. विकास बोध (Understanding Development) 1
2. विकास के कारक और साधन (Factors and Instruments of Development) 13
3. विकसित, विकासशील और अविकसित (Developed, Developing and Underdeveloped) 24

विकास का सिद्धांत (Theorising Development)

4. आधुनिकीकरण, औद्योगिकीकरण तथा नगरीकरण (Modernisation, Urbanisation and Industrialisation) 34
5. विकास पर परिप्रेक्ष्य (Perspectives on Development) 43
6. वैश्विक प्रणाली सिद्धांत (World System Theory) 54
7. मानव और सामाजिक परिप्रेक्ष्य (Human and Social Perspectives) 65

S.No.	Chapterwise Reference Book	Page

8. पर्यावरणीय दृष्टिकोण (Environmental Perspective) 73

9. नारीवादी परिप्रेक्ष्य (Feminist Perspective) 87

भारत में विकासात्मक शासनकाल (Development Regimes in India)

10. पूँजीवाद, समाजवाद और मिश्रित अर्थव्यवस्था 101
(Capitalism, Socialism and Mixed Economy)

11. स्वतंत्रता के रूप में विकास (Development as Freedom) 117

विकास कार्यान्वयन (प्रैक्सिस) के मुद्दे (Issues in Development Praxis)

12. विकास, प्रवासन और विस्थापन 126
(Development, Migration and Displacement)

13. आजीविका और स्थिरता (Livelihood and Sustainability) 139

14. जमीनी स्तर पर पहल (Grassroots Initiatives) 152

■ ■

Sample Preview of the Solved Sample Question Papers

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS
www.neerajbooks.com

QUESTION PAPER

June – 2023

(Solved)

विकास : पुनर्चिंतन

(Rethinking Development)

B.S.O.G.-173

समय : 3 घण्टे] *[अधिकतम अंक : 100*

नोट : *किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।*

प्रश्न 1. विकास के विभिन्न आयामों की संक्षेप में चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-1, पृष्ठ-3, 'विकास के आयाम'

प्रश्न 2. औद्योगीकरण ने आधुनिकीकरण के मार्ग को कैसे बनाया? चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-4, पृष्ठ-35, 'औद्योगिकीकरण'

प्रश्न 3. विकास के पराश्रिता सिद्धांत की चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-5, पृष्ठ-49, प्रश्न-2

प्रश्न 4. सामाजिक विकास के उपागमों का वर्णन कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-10, पृष्ठ-106, प्रश्न-9

प्रश्न 5. विकास की नारीवादी आलोचना की व्याख्या कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-9, पृष्ठ-93, प्रश्न-9 तथा पृष्ठ-94, प्रश्न-10

प्रश्न 6. स्वातन्त्र्योत्तर विकास के भारतीय अनुभव का वर्णन कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-10, पृष्ठ-107, प्रश्न-10

प्रश्न 7. विस्थापन क्या है? विस्थापन और विकास के बीच की कड़ी की चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-12, पृष्ठ-128, 'विस्थापन'

प्रश्न 8. विकास के प्रति सरकार के विविध जमीनी स्तर पर पहल किए गए कार्यक्रमों का वर्णन कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-14, पृष्ठ-153, 'संस्थान और जमीनी स्तर की पहल, जमीनी स्तर पर की गई पहल'

■■

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

QUESTION PAPER

December – 2022

(Solved)

विकास : पुनर्चिंतन

B.S.O.G.-173

(Rethinking Development)

समय : 3 घण्टे] *[अधिकतम अंक : 100*

नोट : *किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।*

प्रश्न 1. विकास के बहु सम्पृक्तार्थों (संकेतार्थों) की व्याख्या कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-1, पृष्ठ-1, 'विकास से संबंधित धारणाएं'

प्रश्न 2. विकास के साधनों (instruments) की रूपरेखा प्रस्तुत कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-2, पृष्ठ-15, 'विकास के साधन'

प्रश्न 3. एक प्रक्रिया के रूप में नगरीकरण विकास को समझने में कैसे सहायता करती है? चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-4, पृष्ठ-35, 'नगरीकरण'

प्रश्न 4. पूंजीवादी विश्व आर्थिक व्यवस्था की उत्पत्ति के ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य का वर्णन कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-6, पृष्ठ-57, 'पूंजीवादी विश्व अर्थव्यवस्था का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य : उत्पत्ति और विकास'

प्रश्न 5. मानव विकास के सामर्थ्य दृष्टिकोण का विश्लेषण कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-7, पृष्ठ-68, प्रश्न 2

प्रश्न 6. महिला विकास को मापने के वैश्विक सूचकांकों की चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-9, पृष्ठ-96, प्रश्न 14

प्रश्न 7. सामाजिक विकास संबंधी दृष्टिकोणों की चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-10, पृष्ठ-106, प्रश्न 9

प्रश्न 8. प्रवसन के स्वरूपों का वर्णन कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-12, पृष्ठ-126, 'प्रवसन : मूल सिद्धांत और प्रारूप'

■■

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

Sample Preview
of
The Chapter

Published by:

NEERAJ
PUBLICATIONS
www.neerajbooks.com

विकास : पुनर्चिंतन
(Rethinking Development)

विकास पुनरावलोकन
(Unpacking Development)

विकास बोध
(Understanding Development)

1

परिचय

विकास की प्रक्रिया जटिल तथा बहुआयामी है। विकास समाज में विभिन्न वर्गों और समुदायों के लिए असमान होता है, इसलिए इसकी प्रक्रियाओं को समझने के लिए सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक ढांचे से संबंधित वृद्धि, विकास और समृद्धि से जुड़े शिक्षाशास्त्र और विचारधारा को समझना जरूरी है। विकास की घटनाओं को मापने के लिए विभिन्न प्रकार के राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्रोतों, एजेंसियों और निकायों द्वारा संकेतकों का प्रयोग किया जाता है, जिन्हें विकास संकेतक कहा जाता है। एक सतत और आदर्श विकास वही माना जाता है, जिसमें सुधार, प्रगति, आधुनिकीकरण, परिवर्तन आदि सम्मिलित होता है। विकास का पर्याय है बेहतर जीवन की प्राप्ति, इसलिए विकास को मापने के लिए लोगों के जीवन की गुणवत्ता और उनके जीवन स्तर को सम्मिलित किया जाता है। जीवन की गुणवत्ता के अंतर्गत दीर्घायु, अपेक्षा, नागरिक सुविधाएं और जीव स्तर, घरेलू संपत्ति, पौष्टिक भोजन आदि को सम्मिलित किया जाता है। विकास की समसामयिक परिभाषा में स्वतंत्रता क्षमता और लोकतंत्र को भी सम्मिलित किया गया है लोकतंत्र और विकास का महत्त्वपूर्ण संबंध है, क्योंकि लोकतंत्र मनुष्य का एक मौलिक अधिकार है, जो की प्रगति और विकास का एक महत्त्वपूर्ण मापक माना जाता है।

अध्याय का विहंगावलोकन

विकास से संबंधित धारणाएं

विकास से संबंधित कई धारणाएं हैं, जैसे–उद्विकास, प्रगति, वृद्धि, परिवर्तन इत्यादि। इन सभी धारणाओं या अवधारणाओं के विषय में जानना बहुत जरूरी है।

उद्विकास और प्रगति

उद्विकास की धारणा लैटिन भाषा के शब्द evolvere से ली गई है, जिसका अर्थ है–विकसित होना या प्रकट होना। इस अवधारणा का प्रयोग विशेष रूप से पौधों, जानवरों और जीवों की आंतरिक वृद्धि के लिए किया जाता है। हर्बर्ट स्पेंसर ने बताया कि सामाजिक उद्विकास को सरल से जटिल तक होने में बहुत वर्षों का समय लगा है। प्रगति का अर्थ है आगे की ओर बढ़ना अथवा वांछनीय छोर की ओर बढ़ना। यह एक मूल्य मुक्त अवधारणा है। मॉर्गन, कॉम्टे, स्पेंसर, मार्क्स, दुर्खीम, वेबर और बहुत से अन्य विचारकों ने मानव समाज के विकास और प्रगति के विभिन्न चरणों का विश्लेषण किया है।

वृद्धि, परिवर्तन और आधुनिकीकरण

द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद की अवधि में विकास के विभिन्न अर्थ सामने आए हैं। विकास की इन धारणाओं का समाज पर भी प्रभाव पड़ा। ये सभी धारणाएं इस प्रकार हैं–

बहुल लक्ष्यार्थों के रूप में विकास–विकास के कई अर्थ है, जैसे–वृद्धि, परिवर्तन के रूप में विकास और आधुनिकीकरण के रूप में विकास।

(क) वृद्धि–आर्थिक संदर्भ में वृद्धि के रूप में विकास के अंतर्गत निम्नलिखित को सम्मिलित किया जाता है–

(i) उपभोग की वस्तुओं के उत्पादन की क्षमता में बढ़ोत्तरी और उपभोग के पैटर्न में एक सहवर्ती वृद्धि।

(ii) मानव की बुनियादी आवश्यकताओं को पूरा करने की क्षमता में वृद्धि।

(iii) संभावनाओं के विस्तार के रूप में व्यक्तिगत विकल्पों, क्षमताओं तथा कामकाज में वृद्धि।

(ख) परिवर्तन और रूपांतरण–परिवर्तन का अर्थ है–समाज में किसी भी प्रकार का परिवर्तन होना। परिवर्तन को मूल्यगत

www.neerajbooks.com

अवधारणा माना जाता है, जबकि विकास मूल्य युक्त अवधारणा है। परिवर्तन और रूपांतरण के संदर्भ में विकास मानव समाजों में आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक प्रक्रियाओं में परिवर्तन को दर्शाता है।

(ग) आधुनिकीकरण–आधुनिकीकरण को विकास के साधन के रूप में देखा जाता है। यह आर्थिक क्षेत्र में औद्योगिकीकरण, नगरीकरण और कृषि में तकनीकी परिवर्तन की प्रक्रियाओं को दर्शाता है। प्रारंभ में विकास का अर्थ उत्पादकता में वृद्धि, आर्थिक समृद्धि और बाजार अर्थव्यवस्था के विस्तार के रूप में लिया जाता था, जबकि गरीबी, कम उत्पादकता और पिछड़ापन अल्प विकास के सूचक थे। 1950 के दशक से औद्योगिकीकरण और सकल राष्ट्रीय उत्पाद के विकास पर विशेष ध्यान केंद्रित किया गया है। ऐसा माना गया है कि तीव्रता से होने वाले राष्ट्रीय परिणाम सामाजिक परिस्थितियों में सकारात्मक परिवर्तन करेंगे। हालांकि औद्योगिकीकरण के बहुत से प्रतिकूल प्रभाव रहे, जैसे–अलगाव, विखंडन, नियतिवाद आदि। समाज से बेरोजगारी, अशिक्षा, उत्पादक संपत्तियों की कमी आदि को दूर करने के लिए विकास की आवश्यकता है।

विकास : संकल्पनात्मक ढाँचा

विकास को आर्थिक वृद्धि के रूप में कल्पित की गई एक सर्व समावेशी घटना माना जाता है। इसके मात्रात्मक परिणाम अधिकांशत गुणात्मक और व्याख्यात्मक हैं। हालांकि आर्थिक विकास के अंतर्गत उत्पादन और रोजगार की संरचना में गुणात्मक परिवर्तन के साथ विकास को सम्मिलित किया जाता है, जिसे प्रायः संरचनात्मक परिवर्तन के रूप में संदर्भित किया जाता है अर्थात गतिशील आर्थिक क्षेत्र राष्ट्रीय उत्पादन रोजगार के अंश में कृषि की तुलना में विकासशील अर्थव्यवस्था का अंश बढ़ जाता है। इससे पता चलता है कि आर्थिक वृद्धि बिना किसी आर्थिक विकास के संभव है। पिछले कुछ दशकों में इस तरह का विकास हुआ है। यदि विकास को संकीर्ण अर्थों में देखें, तो यह कहा जा सकता है कि प्रारंभ में विकास, अर्थव्यवस्था, समाज के आधुनिकीकरण और रोजगार प्रदान करके आय की बढ़ोत्तरी की प्रक्रिया के रूप में है। किंतु विकास को केवल आर्थिक परिवर्तन के रूप में नहीं देखा जाता, अपितु इसका अर्थ लोगों के जीवन की गुणवत्ता के सुधार के रूप में लिया जाता है, इसलिए विकास विशुद्ध रूप से आर्थिक घटना ना होकर एक न्यायसंगत, समतावादी और लोकतांत्रिक व्यवस्था को सुनिश्चित करने की दिशा में एक बहुआयामी प्रक्रिया है।

डडले सीर्स को विकास अध्ययन का संस्थापक माना जाता है। उनके अनुसार विकास एक सुसंगत प्रक्रिया है, जो मानव व्यक्तित्व की क्षमता का बोध कराती है। उन्होंने प्रचलित धारणा का खंडन करते हुए कहा कि आर्थिक वृद्धि ही विकास है और यह तर्क दिया कि तीन एक-दूसरे से संबंधित संकेतक अर्थात गरीबी, बेरोजगारी और असमानता विकास के महत्त्वपूर्ण तत्व हैं।

लेसोथो फर्ग्यूसन ने विकास की विचारधारा में अनैतिहासिक और गैर-राजनीतिक स्वभाव को दर्शाया है। उन्होंने विकासशील और उपनिवेशवाद के पश्चात देशों का विश्लेषण किया है और इनके विचार उत्तरी विकास एजेंसियों से मिलते-जुलते हैं। इन्होंने दुनिया के शेष हिस्से के लोगों की तुलना में उत्तर की पुष्टि करने वाली विचारधाराओं के विषय में अधिक उल्लेख किया है। इस संबंध में वर्तमान विकासोत्तर विद्वानों ने इस बात को माना है कि विकास का संबंध मानव सुधार के साथ कम है, किंतु मानव नियंत्रण और वर्चस्व के साथ अधिक है। इसके विपरीत एस्टीवा ने विकास को संयुक्त राज्य अमेरिका द्वारा द्वितीय विश्वयुद्ध के अंत में अपने आधिपत्य को अधिक सुदृढ़ करने के प्रयास के रूप में दर्शाया है। उसके अनुसार इसी कारण मनुष्य किन परिस्थितियों में पहुँचता है, यह विचारणीय विषय है। फर्ग्यूसन की हिदायत से दो प्रमुख प्रश्न 'क्या किया जाना है? और 'किसके द्वारा किया जाना है? के उत्तर को खोजना आसान होता है। इस प्रकार से और इन श्रेणियों में विभिन्न विचारधाराओं को विकास के बहुत सुसंगत अर्थ और व्यापक वांछनीयता के लिए संघर्ष करना चाहिए।

विकास का अर्थ

विकास के शब्दकोशीय अर्थ के अनुसार विकास का अर्थ है–किसी भी ऐसी चीज के विवरण पर पूर्णतया कार्य करना या किसी चीज में अव्यक्त क्षमता को बाहर निकालना, जिसे विकसित करने की आवश्यकता हो अर्थात किसी में वृद्धि करना या प्रकट करना। विकास की अवधारणा को समझने के लिए ये धारणाएं और विचार उपयुक्त हैं। इसके अलावा द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात विकास को औद्योगिकीकरण और औद्योगिक देशों के संदर्भ में देखा गया और कम अविकसित देशों को तीसरी दुनिया के रूप में वर्णित किया गया।

निःसंदेह विकास का दायरा काफी बड़ा और विशाल है जिसमें भौतिक के साथ-साथ गैर-भौतिक चीजें भी सम्मिलित हैं। विकास की प्रक्रिया सदैव ही चक्रीय रैखिक और सतत होती है। हालांकि विकास के लिए कोई सटीक या संक्षिप्त अर्थ में परिभाषा पर सर्वसम्मति नहीं है। विकास पर लक्षण का पता लगाने के लिए किसी समाज को वर्गीकृत या श्रेणीकृत करने के स्थान पर प्रत्येक विचार इस बात पर बल देता है कि विकास का अर्थ असामान्य उत्पादन से है, किंतु पूर्णतया विकास को कभी माना या महसूस किया जा सकता है, जब इसके अंतर्गत सभी कुछ सम्मिलित हो। हालांकि विकास प्रारंभ में केवल आर्थिक विकास का दूसरा रूप था, किंतु विद्वानों ने विकास को व्यापक बनाने हेतु विभिन्न विश्लेषण किए। विचारकों के विश्लेषण के आधार पर विकास को सामाजिक विकास के रूप में परिभाषित और वर्णित किया गया। इस संदर्भ में सामाजिक विकास का तात्पर्य है कि विकास लोगों के जीवन उनके कार्यों में परिवर्तन लाता है। विकास का प्रभाव विभिन्न समुदायों पर अलग-अलग पड़ता है। इस अर्थ में विकास से तात्पर्य पूर्ण और परिपक्व होने के लिए खुद को प्रकट करना है,

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

इसलिए विकास लोगों के जीवन की गुणवत्ता उनके रहने की स्थिति आदि में प्रगतिशील सुधार को दर्शाता है।

विकास की परिभाषा

गुन्नार मिर्डल विकास की अवधारणा का विश्लेषण करते हुए बताते हैं कि विकास का अर्थ पूरी सामाजिक व्यवस्था को ऊपर की ओर ले जाना है। इस परिभाषा के अंतर्गत सामाजिक प्रणाली का पूर्णतया विकास बताया गया है अर्थात सामूहिक रूप से दी जाने वाली सुविधाएं, जैसे–स्वास्थ्य और शैक्षिक सुविधाएं, समाज में शक्ति का वितरण, लोगों का आर्थिक सामाजिक और राजनीतिक स्थायित्व आदि। पैरोक्स ने विकास की परिभाषा के अंतर्गत व्यवहार और मानसिक दोनों परिवर्तनों पर अपना ध्यान केंद्रित किया है। इसके अलावा वह विकास को आबादी के मध्य मानसिक और सामाजिक परिवर्तनों के संयोजन के रूप में देखते हैं जो अपने वास्तविक और वैश्विक उत्पादों को सतत ढंग से बढ़ाने के उपाय करते हैं। टोडारो ने विकास का वर्णन एक बहुआयामी प्रक्रिया के रूप में किया है, जिसमें संपूर्ण आर्थिक और सामाजिक प्रणालियों के पुनर्गठन और पुनः समायोजन को सम्मिलित किया गया है। उनका कहना है कि विकास एक भौतिक वास्तविकता है और वह मन की स्थिति है, जिसमें समाज ने सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक प्रक्रिया के कुछ संयोजनों के माध्यम से बेहतर जीवन प्राप्त करने का तरीका प्राप्त किया है। उनके अनुसार,

(i) लोगों का जीवन स्तर उन्हें बुनियादी सुविधाएं देकर विकास प्रक्रियाओं के माध्यम से ऊपर उठाना है।

(ii) सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक प्रणालियों तथा संसाधनों को स्थापित करके लोगों के आत्मसम्मान के विकास हेतु अनुकूल परिस्थितियों का निर्माण करना है। जिससे मानवीय गरिमा और सम्मान को बढ़ावा दिया जा सके।

(iii) माल और सेवाओं की किस्मों में बढ़ोतरी करना, ताकि लोगों के पास अपनी पसंद की वस्तुओं को चुनने की स्वतंत्रता हो।

रोजर्स के अनुसार विकास समाज में सामाजिक परिवर्तन की एक प्रक्रिया है, जिसका उद्देश्य पर्यावरण को हानि पहुंचाए बिना आबादी के लिए उत्पाद और सामाजिक प्रगति उपलब्ध कराना है।

सीजरमई बताते हैं कि विकास को समझने के दो विशिष्ट उपाय हैं–

(i) एक अवस्था या स्थिति के रूप में विकास, जो स्थित है तथा

(ii) एक प्रक्रिया गतिशील परिवर्तन के क्रम के रूप में विकास है।

अमर्त्य सेन लिखते हैं कि विकास नागरिकों की क्षमताओं के विस्तार और एक नागरिक और व्यक्ति के रूप में उनके अधिकारों को पूर्ण करने के विषय में है। उनकी विचारधारा के अनुसार स्वतंत्रता देकर क्षमताओं में वृद्धि करना उचित है, जैसे–आर्थिक अवसर, राजनीतिक स्वतंत्रता, सामाजिक सुविधाएं, पारदर्शिता की गारंटी और सुरक्षात्मक सुरक्षा। यह तर्क देते हैं कि इन सभी साधनों को आपस में जोड़ने की आवश्यकता है। सामाजिक व्यवस्थाओं को अपने नागरिकों की मूल स्वतंत्रता में वृद्धि करने उसकी गारंटी देने में योगदान की जांच और परिवर्तन के सक्रिय अभिकर्ताओं के रूप में देखा जाना चाहिए ना कि एक निष्क्रिय लाभ के प्राप्तकर्ता के रूप में। उनके अनुसार समाज में सभी लोगों को स्वतंत्रता और समान अवसर मिलने चाहिए, ताकि वे अपनी क्षमताओं का विस्तार कर सके। इसके अलावा उनका मानना है कि समाज में से अत्याचार, खराब आर्थिक अवसर, व्यवस्थित सामाजिक अभाव, सार्वजनिक सुविधाओं की उपेक्षा के साथ-साथ असहिष्णुता अथवा दमनकारी राज्यों की गतिविधि पर रोक लगनी चाहिए। सेन के क्षमता दृष्टिकोण ने धनी लोगों के विश्व दृष्टिकोण को चुनौती दी है। उन्होंने इस बात को स्पष्ट किया है कि सामाजिक पसंद और सार्वजनिक चर्चा दोनों संभव और आवश्यक हैं।

उनके अनुसार विकास रणनीतियों के विषय में विकल्प लोकतांत्रिक होना चाहिए। थॉमस ने विकास शब्द के 3 तरीकों की व्याख्या की है। पहला, एक दृष्टि के रूप में विकास का अर्थ है कि यह समाज के लिए कितना जरूरी है और समाज को किस वांछनीय दिशा में ले जा रहा है। दूसरा, विकास एक ऐतिहासिक प्रक्रिया है, जो समय की अवधि में सामाजिक परिवर्तन को प्रोत्साहित करती है। यह अपरिहार्य है और इसकी प्रक्रिया निरंतर हैं उदाहरण के तौर पर पूंजीवाद और साम्यवाद दोनों ही प्रगति के अपरिहार्य परिणाम हैं, जो कि विकास की ऐतिहासिक प्रक्रिया के परिणाम है। तीसरा, क्रिया के रूप में विकास परिवर्तन लाने हेतु जान-बूझकर किए गए प्रयासों पर केंद्रित होता है, जो कि इसे बेहतर बनाते हैं।

संयुक्त राष्ट्र के महासचिव कोफी अन्नान ने विकास की परिभाषा में विकसित और विकासशील देशों में लोगों के जीवन में पाई जाने वाली असमानता की ओर अपना ध्यान केंद्रित किया है। उन्होंने अपनी रिपोर्ट में वृहत्तर स्वतंत्रता नाम से गरीबों के अधिकारों और स्वतंत्रता के महत्त्व पर बल दिया है। उनका मानना है कि एक-दूसरे पर आश्रित दुनिया तभी सुरक्षित हो सकती है, जब हर जगह लोग भय से मुक्त होकर रहे और गरिमा से जीने में सक्षम हों। उनके अनुसार आज गरीबों और अमीरों को समान मौलिक अधिकार प्राप्त हैं और विकसित दुनिया की सुरक्षा के लिए भी उतनी ही जरूरी है जितनी कि विकासशील दुनिया के लोगों के लिए। पॉल स्ट्रीटन ने मानव विकास सूचकांक के अंतर्गत लोगों के लिए पोषण, शिक्षा और स्वास्थ्य के विकास पर अधिक जोर दिया है। ये सभी परिभाषाएं अपने समय, संस्कृति, स्थान और सीमा का परिणाम हैं। इनके द्वारा एक समग्र समझ प्राप्त होती है, जिससे विकास का सही अर्थ हमारे सामने आता है।

विकास के आयाम

सामान्य अर्थ में विकास से तात्पर्य परिस्थितियों के परिवर्तन के परिणामस्वरूप एक नए चरण में प्रवेश करने से हैं। विकास के महत्त्वपूर्ण आयाम इस प्रकार हैं।

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

आर्थिक विकास

आर्थिक विकास, विकास का परंपरागत रूप है, जिसके अंतर्गत आर्थिक गतिविधियां और वृद्धि सिद्धांत सम्मिलित हैं। विकास और वृद्धि के कुछ संकेतक हैं, जैसे–प्रति व्यक्ति आय, सकल घरेलू उत्पाद तथा आर्थिक गतिविधियों में वृद्धि। इस प्रकार परिभाषित विकास को आर्थिक विकास के परिणाम के रूप में देखा जाता है। उदाहरण के तौर पर, एक आर्थिक प्रणाली की संरचना में परिवर्तन होना। किंतु आर्थिक विकास को केवल आर्थिक कारक द्वारा नहीं समझा जा सकता तथा विकास की अवधारणा में आर्थिक संकेतक में केवल परिवर्तन ही सम्मिलित है, जबकि विकास की अवधारणा में आर्थिक संकेतक से कुछ अधिक सम्मिलित है। हालांकि आर्थिक परिप्रेक्ष्य विकास के प्रमुख दृष्टिकोण में से एक है।

सामाजिक विकास

विकास समाज के लिए और समाज के लोगों की बेहतरी के लिए होना चाहिए, इसलिए विकास को सामाजिक और समाजशास्त्रीय माना जाता है। विचारकों का मानना है कि सही अर्थ में विकास वही है, जो समाज में निम्न वर्गों को सशक्त बनाए। यदि समाजशास्त्रीय अर्थों में विकास का विश्लेषण किया जाता है, तो हम पाते हैं कि विकास का समाजशास्त्र 19वीं शताब्दी के विकास के सिद्धांतों का महत्त्वपूर्ण अनुक्रमिक है। कृषि व्यवसाय से औद्योगिकीकरण की ओर प्रस्थान को विकास के रूप में समझा जा सकता है। विकास और समानता के मध्य एक विशिष्ट संबंध है, जैसे आर्थिक वृद्धि और सामाजिक विकास एक-दूसरे पर लागू होते हैं अर्थात व्यापक रूप से प्रभावशाली सामाजिक प्रगति सामाजिक रुप से उन्मुख आर्थिक और वित्त नीति के बिना संभव नहीं है। सामाजिक विकास की प्रमुख प्रवृत्ति के अन्तर्गत गरीबी उन्मूलन का लक्ष्य रहा है।

मानव विकास

संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम (यूएनडीपी) के अनुसार मानव विकास का अर्थ लोगों की पसंद को विश्लेषित करने की प्रक्रिया है। विकास की सभी स्तरों पर लोगों की तीन बुनियादी आवश्यकताएं हैं। पहली दीर्घ समय और स्वस्थ जीवन का नेतृत्व करने के लिए। दूसरी ज्ञान प्राप्त करने के लिए और तीसरी एक सभ्य जीवन स्तर के लिए आवश्यक संसाधनों तक पहुँच होना, किंतु मानव विकास यहीं पर समाप्त नहीं होता। इसके अलावा राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक स्वतंत्रता से लेकर रचनात्मक और उत्पादक होने तथा व्यक्तिगत आत्मसम्मान का आनंद प्राप्त करना भी मानव अधिकार माना जाता है। इन्हें मानव विकास का अविभाज्य अंग माना गया है। संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम के अंतर्गत मानव विकास के दो पक्षों को दर्शाया गया है। प्रथम, मानव क्षमताओं का निर्माण करना, जैसे–स्वास्थ्य, ज्ञान और संसाधनों तक पहुँच तथा दूसरा, उत्पादक उद्देश्य हेतु इन क्षमताओं का उपयोग करने वाले लोगों की सांस्कृतिक, सामाजिक और राजनीतिक मामलों में सक्रियता।

भारत मानव विकास रिपोर्ट 1999 के अनुसार ''मानव विकास लोगों के चुनावी विकल्पों की वृद्धि करने की एक प्रक्रिया है। सबसे महत्त्वपूर्ण विकल्प जो लोगों को प्राप्त होना चाहिए एक दीर्घ और स्वस्थ जीवन, ज्ञान और आय, संपत्ति तथा एक सभ्य जीवन स्तर तक लोगों की पहुंच होनी चाहिए। किंतु मानव विकास का लक्ष्य बेहतर स्वास्थ्य या ज्ञान के रूप में मानव क्षमताओं के वृद्धि करने से कहीं अधिक है।'' इसलिए मानव विकास दृष्टिकोण की अंतर्गत लोगों के कल्याण और समाज के साथ उनके संबंध को प्रभावित करने वाले विभिन्न आयामों में सुधार पर ध्यान केंद्रित किया जाता है, जिसके अंतर्गत मानव स्वास्थ्य, शिक्षा, अधिकार, क्षमता सशक्तिकरण आदि सम्मिलित हैं। इस प्रकार, मानव पूंजी और विकास के मध्य संबंधों पर उचित ध्यान देना विकास की एक बहु आयामी अवधारणा की दिशा में अग्रसर होना है।

सतत विकास

सतत विकास के अंतर्गत विकास के दीर्घकालिक पक्ष पर ध्यान दिया जाता है अर्थात यह सुनिश्चित किया जाता है कि अल्प अवधि में होने वाले सुधार भविष्य की स्थिति अथवा प्रणाली की विकास क्षमता के लिए बाधा कारक तो नहीं होंगे। सतत विकास की अवधारणा का प्रारंभ सर्वप्रथम वुडलैंड द्वारा हुआ था। इन्होंने सतत विकास को इस प्रकार परिभाषित किया है, ''विकास वही है, जो भविष्य की पीढ़ियों की आवश्यकताों को पूरा करने की क्षमता से समझौता किए बिना वर्तमान की आवश्यकताों को पूरा करता है।'' सतत विकास इस बात पर जोर देता है कि संपूर्ण संसाधनों का उपयोग किस प्रकार किया जाए कि वह भावी पीढ़ियों के लिए निरंतर प्रभाव में बना रहे।

क्षेत्रीय विकास

विकास के इस आयाम के अंतर्गत क्षेत्रीय प्रणाली पर ध्यान दिया गया है, जिसका उद्देश्य ग्रामीण तथा नगरीय क्षेत्रों के मध्य अंतर-संबंधों के एक समूह के रूप में होता है। एक विशिष्ट क्षेत्र का क्षेत्रीय विकास क्षेत्र के विशिष्ट सामाजिक, आर्थिक, पर्यावरण और संस्थागत क्षमता तथा बाह्य क्षेत्र के साथ इसके संबंध का दोहन करके किया जा सकता है।

समावेशी विकास

विकास के इस आयाम को समाज के वर्तमान समय में विकासात्मक अध्ययन के संदर्भ में जोड़ा गया है। समाज के सभी वर्गों के लिए कुछ जीवन स्तर को प्रोत्साहित करने के लिए विकास और विकास के अधिक समावेशी और सतत प्रतिमान पर ध्यान केंद्रित किया गया है। वर्ष 2018 के श्रेणीक्रम के अनुसार विकसित अर्थव्यवस्थाओं के अंतर्गत 29 देश आते हैं, जबकि 74 देश उभरती अर्थव्यवस्थाओं के अंतर्गत आते हैं। उभरती अर्थव्यवस्थाओं में भारत का स्थान 62वां है और भारत को आगे विकसित अर्थव्यवस्थाओं में सम्मिलित होना है। समावेशी विकास सूचकांक 103 देशों के आर्थिक प्रदर्शन का एक वार्षिक मूल्यांकन है, जिसके अंतर्गत यह मापा जाता है कि सकल घरेलू उत्पाद के

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com